डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान
11–अशोक रोड, नई दिल्ली
www.indiannationalism.org

पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका

विशेष वीर–स्मरण मालिका– वेबसाइट पर उपलब्ध

कवि–रामधारी सिंह 'दिनकर'
जन्म–शताब्दी वर्ष, 2008
जन्मदिन, 23 सितम्बर

क्रांतिवादी कवि दिनकर की भारत–भावना

–डा0 कुमार विमल
(पटना)

पराधीन भारत में 23 सितंबर, 1908 ईस्वी को जन्मे दिनकर मूलतः और स्वभावतः क्रान्तिवादी कवि थे, अदल–बदल के हिमायती कवि थे–'विपथगा' और 'दिगम्बरि!' जैसी आग्नेय कविताओं के 'आलोकधन्वा' कवि थे। 'रेणुका' और 'हुंकार' की रचना के बाद इनके भाव–स्वर बीच–बीच में बदलते रहे; द्वन्द्व, द्विधा, श्रृंगार और प्रपत्ति के भाव इन्हें घेरते रहे; किन्तु, एक लम्बे अन्तराल के उपरान्त 'परशुराम की प्रतीक्षा' में ये पुनः अपने रंग में आ गये–

हम मान गये, जब क्रान्ति काल होता है,
सारी लपटों का रंग लाल होता है। (पृष्ठ 10)

दिनकर, शायद, उथल–पुथल मचाने के लिए केवल 'हिलोर' उठाना पर्याप्त नहीं मानते थे। क्रान्ति इनके लिए 'नये युग की भवानी' थी, जिसकी वेदिका पर 'हृदय का लाल रस' चढ़ाना अनिवार्य था। इनकी कल्पना में रची–बसी क्रान्ति तो 'कराल नर्त्तन–गर्जन' करनेवाली क्रान्ति थी, जिसके 'ललाट में नित्य नवीन रुधिर–चन्दन' लगाने की आवश्यकता थी। आशय यह कि दिनकर की मनचीती क्रान्ति साक्षात् रणचण्डी थी, जो लाल लहू पीती थी और लाल लपट छोड़ती थी।

बेनीपुरी दिनकर को क्रान्ति का कवि कहते थे। उन्होंने 'हुंकार' की 'क्रान्ति का कवि' शीर्षक भूमिका में उचित ही लिखा है कि दिनकर उस (यानी स्वतंत्रता–संघर्ष–कालीन) क्रान्ति–युग का संपूर्ण प्रतिनिधित्व हिन्दी कविता में कर रहे थे। (इसलिए) क्रान्तिवादियों के हृदय–मन्थन की सच्ची तस्वीर दिनकर की कविताओं में मिलती है। क्रान्ति की ज्योति से कान्तिमान विश्व की कविताओं में, बेनीपुरी के मतानुसार, दिनकर की 'विपथगा' और 'दिगम्बरि!' शीर्षक कविताओं का उच्च स्थान सदैव सुरक्षित रहेगा।

दिनकर के इस कवि–रूप की तुलना 'अग्निवीणा' के कवि और 'धूमकेतु' के सम्पादक काजी नजरुल इस्लाम के 'विद्रोह कवि'–रूप के साथ की जा सकती है, जिनकी यह आत्म– परिचयात्मक उक्ति प्रसिद्ध है– 'हाते चाँद भाले सूर्य'। अर्थात् मेरे हाथ में चाँद है और मेरे भाल पर सूर्य है। इतना ही नहीं, नजरुल इस्लाम ने अपने विद्रोही स्वर में यहाँ तक कहा था–

आमि विद्रोही भृगु, भगवान बूके एके दिई पद–चिह्न
आमि खेयाली विधिर वक्ष करिबो भिन्न।

दिनकर की 'विपथगा' और 'दिगम्बरि!' शीर्षक कविता की तरह क्रान्तिवादी नजरुल इस्लाम की प्रसिद्ध कविता है 'कांडारी हूँशियार', जिसकी उद्बोधनमयी पंक्तियाँ हैं–

दुर्गम गिरि कान्तार मरु, दुस्तर पारावार।
लंघिते होबे रात्रि निशीथे, यात्रीरा हूँशियार।।

ऐसा प्रतीत होता है कि दिनकर और काजी नजरूल इस्लाम–दोनों ही भावुक क्रान्तिवादी कवि थे, जिन्हें 'भावुक संकट–घोषक' (sentimental alarmist) कवि भी कहा जा सकता है।

दिनकर जी प्रतिभाशाली होने के साथ ही बहुत परिश्रमी थे। उनके दाहिने हाथ की बीच की उँगली (मध्यमा) के अग्र भाग में कलम से लिखते–लिखते घट्ठा पड़ गया था। चौधरी टोला (पटना) में रहते समय जब उन्होंने हिन्दू नवजागरण पर अपने 'नोट्स' तैयार किये थे, तब उनके इस घट्ठे में बहुत दर्द था। किन्तु, इस दर्द के बावजूद उन्होंने अपने 'नोट्स' को पूरा किये बिना नहीं छोड़ा । कई वर्षों के बाद इन्हीं 'नोट्स' पर आधारित उनका 'मौर्योत्तर हिन्दू जागरण' शीर्षक लेख 'सरस्वती' (इलाहाबाद) के सितंबर, 1955 ईस्वी के अंक में प्रकाशित हुआ। उस समय 'सरस्वती' के संपादक श्रीनारायण चतुर्वेदी थे। इस सामग्री का उपयोग 'संस्कृति के चार अध्याय' में भी किया गया है।

'कहीं भूख बेताब हुई तो आजादी की खैर नहीं'– जैसी पंक्ति लिखने वाले कवि दिनकर की मान्यता थी कि सृजनशीलता के उन्नत स्तर के काम अमीर नहीं करते। उन्हें करनेवाले लोग अक्सर साधारण स्थितियों में जन्म लेते हैं। उनका यह भी कहना था कि मार्क्स के हिंसक वर्ग–संघर्ष को टालने के लिए गाँधीवाद का सहारा लेना एक छल है। शोषण और संचय पर आधारित पूँजीवादी व्यवस्था को न तो मार्क्सवादी कायम रहने देंगे और न सच्चे गाँधीवादी ही उसे बर्दाश्त करेंगे। इस प्रकार दिनकर के सोच–विचार तथा लेखन में गरीबों के प्रति अडिग पक्षधरता थी। रेशमी नगर और संसद में प्रवेश के बाद भी, यहाँ तक कि ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कर लेने के बाद भी–उनके इस सोच में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था।

'रश्मिरथी' में तो कर्ण की कानीनता और उसके विरुद्ध कुलीन मानसिकता पर दिनकर के विचार महाभारत में वर्णित शल्य–कर्ण–संवाद के 'मद्रक–कुत्सन' से भी अधिक गंभीर और तीखे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि समर–श्लाघी कर्ण के हठी और युद्धशाली चरित्र ने कुरुक्षेत्र के इस युद्ध को 'अनिवार्यता' की ओर ढकेला, जिस पर दिनकर ने अपने 'कुरुक्षेत्र' में 'धर्म–युद्ध' (Justum Bellum) की दृष्टि से भी विचार करने का प्रयत्न किया है। दिनकर–काव्य के इन पक्षों पर मैंने 'दिनकर रचना संचयन' की भूमिका में विस्तारपूर्वक विचार किया है। यह ग्रन्थ हाल ही में साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा दिनकर के जन्म–शती–वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया गया है।

अभी भी दिनकर–काव्य के कई ऐसे पक्ष हैं, जो अविवेचित या अल्पविवेचित हैं। जैसे–दिनकर ने भारत–चिन्तन पर कई कविताएँ लिखी हैं, जिनकी तुलना रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'भारत–तीर्थ' शीर्षक कविता के साथ की जा सकती है। दिनकर की भारत–चिन्तन से संबंधित कविताओं में 'भारत–व्रत' (सन् 1955 ईस्वी) और 'किसको नमन करूँ मैं?'(सन् 1953 ईस्वी) शीर्षक कविताएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन कविताओं की कई पंक्तियाँ बहुत ही मार्मिक हैं। जैसे–

भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं, शील यह भूमंडल भर का है।
जहाँ कहीं एकता अखण्डित, जहाँ प्रेम का स्वर है;
देश–देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्वर है।–– (किसको नमन करूँ मैं?)

इसी तरह 'भारत व्रत' शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ भारत की गुरुता के प्रति दिनकर की अडिग आस्था को व्यक्त करती हैं–

अनेकान्त है सत्य, जिसे तुम खोज रहे भुजबल में,
उसी सत्य को ढूँढ़ रहे हम अपने अन्तस्तल में।
जिस देवी के लिए तुम्हारे कर में जवा–कुसुम है,
अर्पित उसी शक्ति को भारत का अक्षत कुंकुम है।––(मृत्ति–तिलक, पृष्ठ 4)

दिनकर की और दो रचनाएँ उनकी भारत–भावना को प्रकट करती हैं– 'भग्न मंदिर बन रहा है' (सन् 1955 ईस्वी) और 'हिमालय का सन्देश' (पद्‌यनाटिका)। 'भग्न मंदिर बन रहा है' शीर्षक कविता के अंतर्गत कवि के मन में सन्निहित भारत–निर्माण की भावना इस रूप में अभिव्यक्त हुई है–

भग्न मंदिर बन रहा है, स्वेद का जल दो।
रश्मियाँ अपनी निचोड़ो, ज्योति उज्ज्वल दो।
चिन्तना को छोड़कर कुछ श्रम करो।
खेत में उद्‌यम करो, उद्‌यम करो।
ज्ञान की आराधना दिन का शयन है,
क्लेश से निस्तार केवल कर्म से है। ––(चक्रवाल, द्वि.सं. पृष्ठ 379–381)

इस प्रकार कर्म–पक्ष की प्रधानता के कारण दिनकर की भारत–धारणा में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की इन पंक्तियों से कुछ आगे की बातें व्यक्त हुई, हैं :

'हेथाय आर्य हेथाय अनार्य हेथाय द्राबिड़–चीन
शक–हूण–दल पाठान मोगल एक देहे होलो लीन'।

प्रकट है कि दिनकर की भारत–धारणा केवल रवि बाबू की –'विराट् हिया', 'उदार छन्द', 'होमानल' और 'महामानव–समुद्र' की भावुक धारणा तक सीमित नहीं है।

डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान,
सभ्यता मूलक विमर्श एवं नीति अनुसंधान केन्द्र,
11, अशोक मार्ग, नई दिल्ली–110 001

संपर्क सूत्र :– 011– 23005735–14 / 23005700 (एक्सटे.714)
टेलीफैक्स :– 011–23382569 / 23005787
अणुडाक :– director@indiannationalism.org